REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER – 2017

चिती की प्रकश में समाज शिक्षा

डॉ. वसुधा विनोद देव
सहयोगी प्राध्यापक, शासकीय अध्यापक महाविद्यालय, अकोला

सारांश :

''समाज पुरूष के व्यक्तिमत्व विकास'' — समाज शिक्षा

समाज शिक्षा पर प्रकाश डालते हुए जब हम समाज की परिभाषा को देखते है तो हिंदु धारणा के अनुसार व्यक्ति के अंर्तप्रेरणा का समाज यह प्रक्षेपण है। अर्थात व्यापक होने की जो स्वाभाविक प्रवृत्ति है। यही प्रवृत्ति समाज संकल्पना को निर्मित करती है। इस विचारधारा का जो अधिष्ठान है वह यह है कि मानव स्वयं अपूर्ण है और वह पूर्णत्व की ओर निरंतर बढता जाता है। इस प्रक्रिया में मानव को अनेक घटक सहाय्यभूत होते है, सुख साधना की इस प्रक्रिया में पूर्ण संस्कार एवं वासना के अनुरूप मानव अस्तित्व के विविध स्तरों से एकरूप होता है और इस एकरूपता के आधार पर जीवन को वैयक्तिक और सामाजिक आयाम प्राप्त होता है। यह हिंदु धर्म की धारणा है स वै नै व रेमे, तस्मादेकाकी न रमते, स द्वितीय मैं छत।'' (वृहदारण्यकोपनिषद) सोड कायमत। बहुस्था प्रजायेतेति (तैतरीय ब्राम्हण) यह इस विचार का आधार है यही प्रेरणा यह समाज निर्मिती का अधिष्ठान है। तैतरीय उपनिषद में संदर्भ आता है। माता पूर्वरूपम्। पितोत्तर रूपम। माता एवं पिता का एक होना यह समाज की प्राथमिक अवस्था है। कुटुंब, परिसर, व्यावसायिक गट, समुह, समाज राष्ट्र, मानवता विश्व यह इस परिघ का विस्तार है। इसका विस्तार इस संशोधन पत्रिका में दिया है।

त्यजदेके कुलस्वार्थे । ग्राम स्वार्थे कुलं त्यजेत ।
ग्रामं जनपदस्वार्थे। आत्मार्थ पृथ्वी त्वजते।

बीजशब्द — चिती, समाज शिक्षा, समान एवं राष्ट्र का चतुर्विध व्यक्तीत्व.

प्रस्तावना :

आत्मप्रेरणा इस परिघ का अधिष्ठान है। यही कारण है कि समाज से चैतन्य अभिव्यक्त होता है। व्यक्ति सुख एवं समाज सुख यह घटक परस्परावलंबी है। व्यक्ति सुख के लिए समाज स्वास्थ्य अनिवार्य है तथा स्वास्थ्यपूर्ण सामाजिक जीवन का उपभोग लेने के लिए व्यक्ति को अपना सुखोपभोग समाज मर्यादा में ही लेना जरूरी है। अवयव तथा अवयवी यह व्यक्ति और समाज संबंध का रूप है। व्यक्ति विकास का ध्येय और समाज विकास का ध्येय इसलिए एक है। व्यक्ति साफल्य की संकल्पना में व्यक्ति साफल्य का संदर्भ है। इसी में जब समाज शिक्षा की विचारधारा को प्रस्तुत करेगे तब हमें इसी मत का ध्यान रखना है। व्यक्तित्व विकास यह शिक्षा का उद्देश्य है। इसी आधारपर समाज का व्यक्तित्व होता और

इसी व्यक्तित्व का विकास यह समाज शिक्षा का आधार है। निम्न आकृति के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है।

सामाजिक व्यक्तित्व के आधार से हमे सर्वप्रथम सामाजिक पुरूषार्थ की ओर प्रकाश डालना आवश्यक है।

सामाजिक धर्म :

समाज निर्माण जिस तत्व प्रेरणा के आधार से होता है वह सामाजिक धर्म है। सह अस्तित्व, सामंजस्य एवं सहकार्य यह समाज की मूल प्रेरणा है। यही प्रेरणा समाजन्वायवुध्दा शोषणरहितता एवं समरसता विकास का आधार है। यथोऽभ्युदया नि:श्रेयससिध्दी सहकार्य: यही सामाजिक धर्म है।

सामाजिक काम :

सामुहिक इच्छा एवं आकांक्षा यह सामाजिक काम है। इतिहास साक्षी है जब भी किसी देश की बनी होती है और अगर देश की अतएवं चैतन्य शक्ति जागृत है तो वह देश पुन: समृध्दि की ओर अग्रेसर होताहै। विकासोन्मुख समाज की आकांक्षा यह समन्वित काम है।

सामाजिक अर्थ :

राष्ट्रीय आकांक्षा से संलग्नित यह घटक है। विविध क्षेत्रों में राष्ट्रीय संकल्प को पूर्ण करने हेतु संरचना का निर्माण यह सामाजिक अर्थ की संकल्पना है। राष्ट्रीय विचार राष्ट्रीय स्वदेशी तत्व के आधारपर यह अर्थ विकसित होना अनिवार्य है। परकिय तत्व को हमें स्वदेश अनुकूल करना होगा।

सामाजिक मोक्ष :

मोक्ष यह संकल्पना व्यक्ति से निगडीत है एवं व्यक्तिगत है। इसलिए यह समाजविन्मुख है। यह मोक्ष संकल्पना पर आरोप है। परंतु मोक्ष की ओर जानेवाला राजमार्ग समाज से होकर ही जाता है। कर्म योग, राज योग, भक्ति योग, ज्ञान योग हमें समाजविन्मुख नहीं होने देते। और इसी माध्यम से विश्व कल्याण को प्राप्त करना यह हमारा मोक्ष होता है। व्यक्तिगत मोक्ष के लिए शुर–वीर समाज की निर्मिती अनिवार्य है। सर्वेपि सुखिन सन्तु इस आंतरिक मूल्य के आधार पर समाज की रचना यह प्राथमिकता बनाती है।

समाजिक निती :

हिंदु जीवन दर्शन में गहन विचार यह निती संकल्पना का आधार है। भारतीय संस्कृति यह कर्तव्य भावनापर अधिष्ठित है। अधिकार संकल्पना को वह नही मानता। ऋण से ज्ञान संक्रमण एवं पितृऋण से समान सातत्य, आचार्य ऋण से ज्ञान संक्रमण, एवं देव ऋण से सर्वभूहितेरतत यह मूल्य भाव अपेक्षित है। कानून से यह प्रतिवर्धित नहीं। सामाजिक निती यह मानव अनुकूल वर्तनशास्त्र है। इसलिए समाज ऋण की संकल्पना को समाज में दृढ करना होगा।

यह विचार समाज शिक्षा का आधार होना चाहिए और शिक्षा के माध्यम से निम्नलिखित मूल्य संस्कार अपेक्षित है।

१) त्याग भावना को वृध्दिंगत करना :

सामाजिक शिक्षा के माध्यम से त्याग भावना का सत्कार होना आवश्यक है। व्यक्तिगत ध्येयपूर्ति एवं सामाजिक ध्येयपूर्ति इनमें जब भी द्वंद्व उत्पन्न होता है तब सामाजिक ध्येयपूर्ति को महत्वपूर्ण मानना होगा यह भावना का दृढिकरण होना अनिवार्य है।

२)जैविक एकात्मता का संस्कार :

मानव और समाज इनके अनवय व अवयवी यह संबंध है। अवयव के बिना अवयवी निरर्थक है। इस आधारपर सम संवेदना, सह संवेदना, सहकार्य, सामाजिक न्याय, इनके प्रति सकारात्मकता होना आवश्यक है। इसलिए संस्कार यंत्रणा को मजबुत बनाना चाहिए। अगर समाजपुरूष के अवयव में कही

चोट आती है तो अन्य अवयव द्वारा यह क्षतिपूर्ति होकर समाजपुरूष सक्षम बनने के लिए सहकार्य की वृत्ति को वृध्दिंगत करना आवश्यक है।

३) राष्ट्रावना का संस्कार :

समाज संस्कृति, समाज जीवनमूल्य, व्यक्तिगत एवं सामाजिक निती के समान निकष इससे ही राष्ट्र भावना दृढ हो सकती है। सांस्कृतिक एकता के माध्यम से एक आत्मिक बंध निर्माण होना अनिवार्य है। अगर ऐसा आत्मिक बंध निर्माण होता है तो ही राष्ट्र का विकास संभव है। मानवता निर्मिती में राष्ट्रभावना निहित है।

४) धर्मोपासना एवं धर्म का विवेकी आचरण :

धर्म के सही अर्थ को समाज के सम्मुख रखना अति आवश्यक है। धर्म का पर्यायी शब्द Religion नही हो सकता। क्योंकि धर्म से मूल प्रकृति की अभिव्यक्ति होती हैं धर्म यह अस्तित्व आधार है। इसलिए धर्म की परिभाषा स्वामी चिन्मयानंदजी 'Law of being' करते है। अस्तित्व के हर पहलू में एक हीतत्व विराजमान है। यह अनुभूति हमें धार्मिक बनाती है। इस अनुभूति के लिए मानवीय गुणों का उन्नयन आवश्यक है। यह धर्मोपासना सार्थक होने के लिए सभी कर्मकांड, अंध:श्रध्दा आदि दोषों का निरसन करना होगा। धर्म की संकल्पना आचार्य धर्म, पितृ धर्म, मातृ धर्म, नेता धर्म इससे भी निगडित है। अतएव प्रत्येक भूमिका के अनुसार कर्मो का पालन अभिप्रेत है। इस भूमिका के अनुरूप मानव के कर्तव्य क्या है इसका विचार हमें करना होगा।

५) वैश्विक दृष्टिकोण निर्मिती :

समाज में वैश्विक दृष्टिकोण निर्माण करना आवश्यक है। 'हे विश्वचि माझे घर' इस मराठी उक्ति के अनुसार यह भावना दृढ होना चाहिए। सह अस्तित्व, सहिष्णुता यह हमारे मूल्य है। इस मूल्य के आधारपर जब हम विश्व की ओर देखते है तो जीवन दृष्टि को छेडनेवाले द्वंद्व को इस जीवन दृष्टि में स्थान नही। मै और विश्व अभिन्न है यह दृढ धारणा हो। वैश्विक दृष्टिकोण को बढावा देगी।

उसके अलावा निम्नलिखित ध्येयों को समाज शिक्षा के लिए सामने रखना होगा।

अ) आश्रमव्यवसाि को समाजानुकूल करना
ब) निती विचार को समाजानुकूल करना
क) सामाजिक पुरूषार्थ संकल्पना को बढावा देना
ड) सामाजिक व्यक्तित्व को विकसित करना

उपरोक्त उद्देश्य यह समाज शिक्षा के आधार है। इस आधार से अगर Curriculum indicator को बनावा जाता हैं, तो यह समाज शिक्षा चिती को बनाए रखेगी। इसलिए आज जो समाज में स्वायत्त क्षेत्र विद्यमान है।

पाठ्यक्रम निदर्शक :

समाज शिक्षा के पाठ्यक्रम निदर्शक तत्व निम्नलिखित है —

१) समग्र व्यक्तिमत्व विकास की संकल्पना
२) जैविक तथा पारमार्थिक एकातमता
३) वैश्विक दृष्टिकोण
४) मूल्याशय
५) हिंदुत्व की विचारधारा में अखिल मानव जीवन
६) व्यक्ति का आध्यात्मिक अधिष्ठान
७) विश्व का अधिष्ठान
८) राष्ट्र संकल्पना तथा राष्ट्र भावना (संस्कृति परंपरा कला)
९) धर्म संकल्पना — अध्यात्म संकल्पना

समाज शिक्षा धर्मोपासना क्षेत्र को सौंपना होगा। अर्थात धर्म संघटना के कार्य में समाज शिक्षा को अंतर्भुत करना होगा, धर्म संघटना और शिक्षण संघटना को हाथ में हाथ डाले यह कार्य करना होगा। धर्म

जब तक शिक्षण संघटना का रूप नहीं धारण करता यह बात संभव नहीं होगी। इसलिए ऐसे धर्म शिक्षण संस्था की आवश्यकता है जो Law of Being के सिध्दांतो को मान्यता देता हो। इस धर्म शिक्षण मूलाधार होना चाहिए कि धर्म का सही अर्थ है। हिंदुत्व यह ऋषीत्व है। इस आधारपर सभी धर्म यह हिंदुत्व की ही धाराएँ है। जब—जब किसी धर्मा संचालन को हम ऋषी की मान्यता देते है। तब—तब हम हिंदुत्व को मान्यता देते है। इस दृढ विचारधारा के आधारपर हमें धर्म शिक्षण संघटन की निर्मिती करना अनिवार्य है। तथा इसको स्वायत्तता प्रदान करना अनिवार्य है एवं कार्य निती निर्धारण करना अनिवार्य है। तथा इसको स्वायत्तता प्रदान करना अनिवार्य है। एवं कार्य निती निर्धारण करना अनिवार्य है। तथा इसको स्वायत्तता प्रदान करना अनिवार्य है। यह कार्य राज्य संस्था पर, नहीं सौंपा जाएगा। इसकी कार्य निती धर्म शिक्षण निर्धारित करेंगे।

संदर्भग्रंथ सूची :

1- Deo V. V. (2009). 'Shikshnopanishad'. Nagpur, Mangesh Prakashan.
2- Swami Tejomayananda (2004). Right Thinking. Mumbai: Chinmaya Seva Trust, Maharashtra.
3- Swamini Samvidananda (2006). Chinmay Vision Program. Mumbai : chinmaya Seva Trust, Maharashtra.